1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को श्रावणी पर्व एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनाएं

वर्ष 39, अंक 42 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 22 अगस्त, 2016 से रविवार 28 अगस्त, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 4
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

योगीराज श्रीकृष्णचन्द्र जी के 5244वें प्रकटोत्सव 'जन्माष्टमी' पर विशेष

प्रेरक जीवन के धनी–योगीराज भगवान श्री कृष्ण

– डॉ. महेश विद्यालंकार

भारत की विशेषता एवं आकर्षण रहा है कि इस देश को महापुरुषों एवं सद्ग्रन्थों की परम्परा व विरासत मिली है। जैसे ऋषि-मुनि, सन्त-तपस्वी, त्यागी,उपकारी महापुरुष और वेद, दर्शन, गीता, रामायण आदि ग्रन्थ इस देश को मिले हैं, वैसे अन्य देशों के पास नहीं है। महापुरुषों की लम्बी परम्परा में भगवान श्रीकृष्ण का नाम सम्पूर्ण मानव जाति बड़ी श्रद्धा, सम्मान, आदर एवं पूजनीय भाव से लेती है। अधिकांश लोग उनमें दैवीय गुण युक्त पूजा भाव रखते हैं। भगवान श्रीकृष्ण धर्मात्मा, पुण्यात्मा तपस्वी, त्यागी, योगी, वेदज्ञ, नीतिज्ञ, निरहंकारी, लोकोपकारी युग निर्माता आदि विशेषताओं से पूर्ण महापुरुष थे। उनके व्यक्तित्व, कृतित्व पर न जाने कितना लिखा-पढ़ा सुना और बोला गया है फिर भी उनका वास्तविक प्रामाणिक सत्य जीवन चरित आज हमारे से ओझल हो रहा है। यही उनके प्रति सबसे बड़ी त्रासदी एवं कृतघ्नता है। भारत का सम्पूर्ण धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृति पूजा पाठ, धर्म कर्मकाण्ड आदि दो महापुरुषों मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम और योगीराज भगवान श्रीकृष्ण पर टिका है। इन दोनों दिव्यात्माओं को अलग कर दिया जाय तो कुछ भी पौराणिक जगत के पास नहीं बचता है। भगवान श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व एवं कृतित्व चुम्बकीय, अद्वितीय, दिव्य, भव्य, प्रेरक, आकर्षक एवं बहुआयामी था। इसी के कारण हजारों वर्षों के घात-प्रतिघातों, परिवर्तनों और विवादों के झेलने के बाद आज भी पूजित, स्मरणीय, वन्दनीय एवं अलौकिक महापुरुष के रूप में प्रतिष्ठित व सम्मानित हैं। महाभारत काल में अनेक विशेषताओं से युक्त महापुरुष हुए, मगर सभी का जन्मदिन नहीं मनाया जाता है। सूचना, विज्ञापन, पत्रक आदि के बिना सबको भगवान श्रीकृष्ण की जन्मतिथि याद है। जितनी धूमधाम, सजावट-बनावट, भव्यता, श्रद्धा व पूज्यभाव से श्रीकृष्ण का जन्मदिन विश्वस्तर पर प्रदर्शित और मनाया जाता है, ऐसा और किसी का नहीं मनाया जाता है। श्रीकृष्ण मानवता के रक्षक, पालक तथा उद्धारक थे। इसलिए मानव समाज उनका जन्मोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाता है।

श्रीकृष्ण का ऐतिहासिक परिस्थिति में जेल में जन्म हुआ। जन्म से पहले ही मृत्यु के वारण्ट निकल गए। पराये घर में यशोदा माता की गोद में पले। असली माता-पिता वासुदेव और देवकी थे। यशोदा माँ ने माता की भूमिका इतनी सुन्दरता, कुशलता, निपुणता और वात्सल्यपूर्ण निभाई कि लोग असली माता देवकी को भी भूल गए। विकट परिस्थितियों में तथा मजबूर होकर मामा कंस को प्रजा एवं धर्म रक्षार्थ मरवाना पड़ा। श्री कृष्ण जी का सारा जीवन मुसीबतों संघर्षों कठिनाइयों और विपरीत परिस्थितियों का अजायबघर रहा है। निरन्तर आक्रमण, संघर्ष, कलह अशान्ति आदि के कारण और मदान्ध जरासन्ध की बढ़ती ईर्ष्या-द्वेष से बचने के लिए मथुरा से दूर वे द्वारिका चले गए। जिससे जरासन्ध का बैर विरोध शान्त हो जाये। अन्त एक बहेलिए के आकस्मिक तीर से हुआ। श्रीकृष्ण का सम्पूर्ण जीवन **परित्राणाय साधूनाम्** सज्जनों की रक्षा हो, **विनाशाय च दुष्कृताम्,** दुष्टों का दलन हो, **धर्म संस्थापनार्थाय** धर्म की रक्षा और अधर्म का नाश हो, इसी उद्देश्य में सारा जीवन निकला। इस उद्देश्य की पूर्ति और कार्यों की सिद्धि के लिये उन्हें नानारूप धारण करने पड़े। उन्हें कईबार विरोध, कष्ट, मानसिक पीड़ा और अपमान का जहर पीना पड़ा। जातीय कलह, संघर्ष तथा बढ़ते मदिरापान के प्रचलन से अन्त में दुःखी रहने लगे। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त श्री कृष्ण को कभी शान्ति, चैन आराम व सुख से रहने व बैठने का अवसर नहीं मिला। ऐसा अद्भुत विलक्षण, सर्वगुण सम्पन्न, मानवता का पुजारी, धर्मशास्त्र, राजनीति, कूटनीति आदि के ज्ञाता युगपुरुष

संसार के इतिहास में नहीं मिलेगा।

अपने देवी, देवताओं तथा महापुरुषों के चरित्र व जीवन दर्शन को विकृत एवं कलंकित करने वाली संसार में कोई अभागी जाति है तो वह हिन्दू जाति है। जिसने अपने देवपुरुषों का सत्य स्वरूप जाना, माना और समझा नहीं। जैसा श्री कृष्ण का भौंडा, विकृत भोगी और विकारी चरित्र लोककथाओं, किस्से-कहानियों, सीरियलों, पिक्चरों, फिल्मों आदि में दिखाया व बताया जा रहा है वैसा सच्चे अर्थ में उनका जीवन नहीं था। पुराणों व लोकसाहित्य में उन्हें चोर-जार शिरोमणि, लम्पट, माखन चोर, भोगेश्वर आदि न जाने क्या-क्या लांछन लगाए गऐ हैं। श्रीकृष्ण के नाम पर अश्लीलता, शृंगार-भोग वासना, पाखण्ड, अन्ध विश्वास आदि मीडिया के माध्यम से परोसा और फैलाया जा रहा है। उनके चरित्र के दैवीय गुणों की गरिमा पर कीचड़ उछाला जा रहा है। यह सत्य है कि श्रीकृष्ण का जीवन गुण, कर्म, स्वभाव, आचरण आदि ऐसा नहीं था जैसा कि आज दुनिया देख व मान रही है। यह हमारा दुर्भाग्य, अज्ञानता, अशिक्षा और मानसिक विकृति रही कि श्रीकृष्ण जैसे राष्ट्रनायक इतिहासपुरुष योगीराज विशेषणधारी और असाधारण दिव्यात्मा के जीवन को हम कितना नीचे गिरा रहे हैं? यह हम सभी के लिए चिन्तनीय और निन्दनीय होना चाहिए। क्या उनके योगदान का यही प्रतिदान है?

आर्यसमाज का जन्म ही सत्य के शोधन और उसके प्रचार-प्रसार के लिए ही हुआ है। इसका नारा रहा है जागते रहो, जागते रहो? आर्य समाज ने अन्य क्षेत्रों में योगदान के साथ-साथ महापुरुषों के उज्ज्वल धवल निर्मल जीवन चरित्रों को संसार के सामने रखा। उनके चरित्रों के ऊपर जो गन्दगी, लांछन, मनगढन्त, वे सिर-पैर की बातें और विकृतियां आई, उनकी प्रामाणिकता एवं तर्क-प्रमाण से सफाई की। उनके देवत्व एवं महापुरुषत्व की वकालत व रक्षा की। जिस सत्य स्वरूप में आर्यसमाज अपने महापुरुषों को मानता, पहिचानता और बताता है, उस रूप में संसार नहीं जानता है। अधिकांश लोगों में यह भ्रान्ति, अज्ञान व नासमझी है कि आर्य समाज किसी देवी-देवता, महापुरुष आदि को नहीं मानता है? यह भूल व भ्रांति है, जितनी सच्चाई, गहराई और वास्तविक रूप में आर्य समाज अपनी सभ्यता, संस्कृति धर्मग्रन्थों तथा महापुरुषों को

– शेष पृष्ठ 3 एवं 4 पर

....आर्य समाज श्री कृष्ण जी को गुण-कर्म स्वभाव, जीवन दर्शन आदि से युक्त महापुरुष के रूप में सम्मानित एवं प्रतिष्ठित करता है। उन्हें अवतारी ईश्वर के रूप में नहीं मानता है। ईश्वर एक है। वह जन्म-मृत्यु तथा अवतार के बन्धन से परे है। वह कभी अवतार नहीं लेता है। ईश्वर और भगवान में मौलिक अन्तर है- भगवान शब्द पदवी व सम्मान है। मनुष्य गुण, कर्म, स्वभाव, आचरण से भगवान बन सकता है, मगर ईश्वर नहीं हो सकता है। ईश्वर चित्र-विचित्र जड़ चेतन सृष्टि को बनाता-चलाता, समस्त जीवों का पालन करता, संहार की सामर्थ्य रखता और जीवों के कर्मानुसार फल देने की सामर्थ्य रखता है।...

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक सम्पन्न

पारित प्रस्ताव एवं निर्णयों की जानकारी अगले अंक में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में केन्द्रीय आर्य समाज नेपाल के सहयोग से

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन काठमाण्डू (नेपाल)- 2016

20-21-22 अक्टूबर 2016 तदनुसार कार्तिक क. 5, 6, 7 वि.

सम्पूर्ण यात्रा विवरण एवं आवेदन प्रपत्र सभा की वैबसाइट www.thearyasamaj.org पर उपलब्ध है। स्थान सीमित हैं।
इच्छुक आर्य महानुभाव अपने आवेदन शीघ्र भेजें। अन्तिम तिथि : 31 अगस्त (हवाई यात्रा) 15 सितम्बर (बस यात्रा)

वेद-स्वाध्याय

सत्य की विजय

सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय सच्चासच्च वचसी पस्पृधाते।
तयोर्यत्सत्यं यतरदृजीयस्तदित्सोमो अवति हन्त्यासत्।। – ऋ॰ 7/104/12
ऋषिः **वसिष्ठः।।** देवता **सोमः।।** छन्दः **विराट्त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ– **सुविज्ञानम्**=उत्तम विशेष ज्ञान को **चिकितुषे**=जानना चाहनेवाले विवेकी **जनाय**= मनुष्य के लिए **सत् च असत् च** = सत्य और असत्य **वचसी** = वचन या ज्ञान **पस्पृधाते**=परस्पर स्पर्धा करते हैं। **तयोः**=इन दोनों में **यत्सत्यम्**=जो सत्य है **यतरत् ऋजीयः**= जौन-सा सरल, अकुटिल, छलरहित है **तत् इत्**= उसी की सोम परमेश्वर **अवति**=रक्षा करता है और **असत् हन्ति**=असत् का नाश करता है।

विनय–मनुष्य जब वास्तविक ऊँचे ज्ञान को विवेक पूर्वक जानना चाहता है, जब वह सत्यज्ञान की खोज में होता है, तब उस विवेकशील पुरुष के सामने सत् और असत् दोनों स्पर्धा करते हुए आते हैं। दोनों उसके सामने अपनी-अपनी श्रेष्ठता दिखाना चाहते हैं, दोनों उसके हृदय पर अधिकार करना चाहते हैं। कभी सत् प्रबल होता है, कभी असत् प्रबल होता है। इस प्रकार देर तक यह स्पर्धा, यह लड़ाई, चलती रहती है। जब उसपर किन्हीं कुटिल और असत्य से काम निकालने वाले लोगों का प्रभाव पड़ता है तब वह असत्यता को ही उत्तम समझ लेता है; परन्तु जब वह सत्यग्रन्थों को पढ़ता है या सच्चे, निष्कपट, पवित्र लोगों के संग में आता है तब सत्य की महत्ता को समझने लगता है। पुनः किसी बलवान् नीतिनिपुण पुरुष का प्रभाव उसे यह सिखला देता है कि संसार में असत्य के बिना काम नहीं चलता है। पुनः कोई महान् सत्यनिष्ठ पुरुष उसे सत्य का पुजारी, सत्य के पीछे पागल बना देता है। इस प्रकार सत् और असत् दोनों प्रकार के वचन (ज्ञान) उसपर प्रभाव जमाने के लिए स्पर्धा करते रहते हैं, परन्तु मनुष्य को यह पता होना चाहिए (और विवेकी पुरुष को यह धीरे-धीरे पता हो जाता है) कि मनुष्य के हृदय में बैठा हुआ सोम परमेश्वर तो सदा सत् की, अकुटिल की ही रक्षा कर रहा है और असत् का नाश कर रहा है। जो लोग इस सत्य से अभिज्ञ हो जाते हैं वे तब सोम की शरण में जाना चाहते हैं और जो सचमुच सर्वोच्च सत्य ज्ञान की खोज में लगे हुए हैं उन्हें इसी हृदयस्थ सोम देव की शरण में जाना चाहिए, तभी उन्हें अपना अभीष्ट मिलेगा, क्योंकि सब भूतों के हृद्देश में बैठे हुए सोम ईश्वर के आश्रय को मनुष्य जितना ही अधिक सर्वतोभाव से ग्रहण करता है, उतना ही उसमें असत्य का नाश होकर सत्य और निष्कपटता बढ़ती जाती है और उसमें सुविज्ञान भरता जाता है, अतः इस सत् और असत् की लड़ाई में मनुष्य जितना ही सोम का आश्रय लेगा, उतनी ही जल्दी उसमें सत्य की विजय होगी और उसे शान्ति मिलेगी। प्रत्येक जीव की इस सत्-असत् की स्पर्धा में जल्दी या कितनी ही देर में अन्ततः सोम परमेश्वर द्वारा विजय तो सत्य की ही होनी निश्चित है, क्योंकि वे सोम सदा सत्य का, सत्य वचन का, सत्य व्यवहार का रक्षण कर रहे हैं और असत्य का, असत्य भाषण का, असत्य व्यवहार का हनन कर रहे हैं।

– साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

संविधान पर भारी है, भूत-प्रेत

धर्म की आड़ में पाखंडियों द्वारा नारी का शोषण अभी भी जारी है, परन्तु कह नहीं सकते कि किस लालसा में सत्ता और सरकारी तंत्र मौन बैठा है। दुखद बात यह है कि अभी भी परम्पराओं के नाम पर, तो कभी चमत्कारों की आशा में भोले-भाले लोग अंधविश्वास की चपेट में आते रहते हैं। किन्तु इससे भी बड़ा आश्चर्य तो तब होता है जब खुद को पढ़ा लिखा समझने वाले लोग परंपराओं के नाम पर अंधमान्यताओं को लेकर खासे गंभीर दिखाई देते हैं। कई रोज पहले समाचार पत्र की यह खबर पढ़कर बड़ा दुःख हुआ कि आधुनिकता के इस परिवेष में भी लोग अभी भी आदिम रूढ़ियों के साये में जी रहे हैं। राजस्थान के भीलवाड़ा जिले के आसिंद के नजदीक बंक्याराणी माता मंदिर यहां हर शनिवार और रविवार को हजारों भक्तों के हुजूम के बीच 200-300 महिलाओं को ऐसी यातनाओं से गुजरना पड़ता है जिसे देखकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। पीठ और सिर के बल रेंगकर ये महिलाएं 200 सीढ़ियों से इसलिए नीचे उतरती हैं ताकि इन्हें कथित भूत से मुक्ति मिल जाए। इतना ही नहीं सफेद संगमरमर की सीढ़ियां गर्मी में भट्टी की तरह गर्म हो जाती हैं। कपड़े तार-तार हो जाते हैं। शरीर जख्मी हो जाता है। सिर और कोहनियों से खून तक बहने लगता है। किस्सा यहीं खत्म नहीं होता। इसके बाद महिलाओं को चमड़े के जूतों से मारा जाता है। मुंह में गंदा जूता पकड़कर दो किमी चलना पड़ता है। उसी गंदे जूते से गंदा पानी तक पिलाया जाता है जबकि कुंड का पानी इतना गंदा होता है कि हाथ भी नहीं धो सकते हैं। वे भी एक-दो बार नहीं बल्कि पूरे सात बार पिलाया जाता है। झाड़फूंक करने वाला ओझा यह ध्यान रखता है कि महिला पानी पी रही है या नहीं। यदि नहीं पीती है तो जबरदस्ती की जाती है। पूरे वक्त ज्यादातर महिलाएं चीख-चीखकर यह कहती हैं कि उन पर भूत-प्रेत का साया नहीं, वह बीमार हैं लेकिन किसी पर कोई असर नहीं होता। छह-सात घंटे तक महिलाओं को यातनाएं सहनी पड़ती हैं।

यह एक जगह की कहानी नहीं है। न यह कोई हादसा है बल्कि देश के अनेक राज्यों में सालों से ऐसी परंपराएं चली आ रही हैं जिनका पालन करने में लोग खासी गंभीरता दिखाते हैं। जहां भारत में आधुनिकतावादी एवं पश्चिमी संस्कृति हावी होती जा रही है, वहीं आज के कम्प्यूटराइज्ड युग में भी ग्रामीण समाज अंधविश्वास एवं दकियानूसी के जाल से मुक्त नहीं हो पाया है। देश के कई हिस्सों में जादू-टोना, काला जादू, डायन जैसे शब्दों का महत्व अभी भी बना हुआ है। आज के आधुनिक माहौल में भी देश के पूर्वोतर राज्यों में महिलाओं को पीट-पीट कर मार डालने जैसी हृदय व्यथित कर देने वाली घटनाएं जारी हैं। इन महिलाओं में अधिकांश विधवा या अकेली रहने वाली महिलाएं शामिल होती हैं। हालांकि इन महिलाओं का लक्ष्य किसी को नुकसान पहुंचाना नहीं होता है पर किसी कारण यदि ओझाओं द्वारा किसी महिला को डायन करार दे दिया तो इसके बाद उसके शारीरिक शोषण का सिलसिला शुरू हो जाता है। ओझा इन महिलाओं को लोहे के गर्म सरिए से दागते हैं, उनकी पिटाई करते हैं, उन्हें गंजा करते हैं और फिर इन्हें नंगा कर गांव में घुमाया जाता है। यहां तक कि इस कथित डायन महिला को मल खाने के लिए भी विवश किया जाता है।

इन राज्यों में बिहार, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, असम, पश्चिम बंगाल आदि प्रमुख रूप से शामिल हैं। विश्लेषकों का मानना है कि आदिवासी-बहुल राज्यों में साक्षरता दर का कम होना भी अंधविश्वास का एक प्रमुख कारण है। यहां महिलाओं की शिक्षा पर ध्यान दिए जाने की जरूरत है। हालाँकि ये ओझा महिलाओं को भूत-प्रेत का शिकार बताकर अच्छी रकम ऐंठते हैं। ओझा पुरुष एवं औरत दोनों हो सकते हैं। ग्रामीण समुदाय के लोग किसी बीमारी से छुटकारा पाने के लिए डॉक्टर पर कम, इन ओझाओं पर अधिक विश्वास करते हैं। ये ओझा इन लोगों की बीमारी का जादू-टोने के माध्यम से इलाज करने का दावा करते हैं। कुछ समय पहले ही पुरी जिले में एक युवक ने अंधविश्वास से प्रेरित होकर रोग से छुटकारा पाने के लिए अपनी जीभ काटकर शिवजी पर चढ़ा दी थी। उड़ीसा के एक आदिवासी गांव की आरती की कहानी तो और भी दर्दनाक है। कई वर्ष पहले एक ओझा द्वारा आरती की हत्या का मामला सुर्खियों में आया था। जादू-टोने के सिलसिले में आरती का इस ओझा के यहां आना-जाना था। एक दिन ओझा ने जब आरती के साथ शारीरिक संबंध बनाने की इच्छा जाहिर की तो आरती ने इसका विराध किया। उसके इनकार के बाद इस ओझा ने आरती के साथ बलात्कार किया और बाद में उसकी हत्या कर दी थी।

इसमें अकेला अशिक्षा का भी दोष नहीं है। दरअसल जिस देश के नेतागण ही अंधविश्वास में जी रहे हों उस देश का क्या किया जा सकता है? कई रोज पहले की ही घटना ले लीजिये। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया की गाड़ी पर एक कौआ बैठ गया जिसके बाद उस कौवे को शनि का प्रतीक मानते हुए मुख्यमंत्री के लिए नई गाड़ी खरीदने का आदेश जारी कर दिया गया। यहीं नहीं यदि बात पढ़े-लिखे वर्ग की करें तो सोशल मीडिया पर कोबरा सांप की, साईं बाबा या बन्दर आदि की फोटो, डालकर उस पर लिखा होता है जल्दी लाइक करने से बिगड़े काम बनेंगे और देश का दुर्भाग्य कि उस पर हजारों लाइक मिलते हैं। ये लाइक करने वाले कोई विदेशी नहीं वरन् अपने ही देश के पढ़े-लिखे लोग होते हैं। अंधविश्वास को वैज्ञानिकों ने निराधार साबित कर दिया है। आर्य समाज ने धार्मिक पाखंडों की अंधेरी गलियों से ठोस व तार्किक आधार द्वारा बाहर निकालने के लिए रास्ते बता दिए। लेकिन इसके बाद भी पोंगापंथी धर्मगुरुओं ने अपने धार्मिक अंधविश्वासों की रक्षा के लिए सच्चाई को ही सूली पर चढ़ा दिया। हमें यह कहने को मजबूर होना पड़ रहा है कि परीक्षा में पेपर खराब हो जाने का डर हो या व्यापार में घाटे का या फिर परिवार के किसी सदस्य की गंभीर बीमारी का डर, कमजोर इंसान आज भी भगवान, मंदिर या फिर किसी धर्मगुरु की शरण में पहुंच जाता है और शायद इसीलिए तथाकथित बाबा, ओझा, ढोंगी धर्मगुरु लोगों को बेवकूफ बना कर उनसे करोड़ों रुपए बटोरने में कामयाब हो जाते हैं। जो इनके चक्कर में एक बार आ जाता है वह एक बार लुट जाने पर बार-बार जुआरी की तरह लुटने की आदत सी बन जाती है।। सरकारों को इस तरह के कृत्य को, धार्मिक अपराध को शारीरिक शोषण की श्रेणी में लाया जाना चाहिए। दूसरी बात महिलाओं के अधिकार पर बड़ी-बड़ी बातें करने वाली महिला आयोग ऐसे गंभीर मामलों पर चुप क्यों पाई जाती हैं? संविधान कहता है यदि किसी महिला को लगातार 14 -15 सेकेंड से ज्यादा देखा जाता है तो वह छेड़छाड के दायरे में आता है किन्तु भीलवाड़ा में जूतों से पानी पिलाने, पिटाई करने के और ढोंगी बाबाओं के महिला उत्पीड़न के कृत्य को चुपचाप देखने की संविधान और राज्य सरकारों की क्या मजबूरी है? या फिर संविधान और सरकारों पर भी भूत-प्रेतों का साया है?

-सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

पृष्ठ 4 का शेष

प्रथम पृष्ठ का शेष

जानता-मानता एवं मान-प्रतिष्ठा देता है, शायद दूसरा न दे सके। आर्य समाज अपने महापुरुषों के चित्र का सम्मान करता है और चरित्र के अनुकरण की प्रेरणा देता है। महापुरुष और बड़े बुजुर्ग हमारे प्रकाश स्तम्भ होते हैं जिनसे हमें जीवन के लिए रोशनी मिलती है।

आर्यसमाज श्रीकृष्ण जी को गुण-कर्म स्वभाव, जीवनदर्शन आदि से युक्त महापुरुष के रूप में सम्मानित एवं प्रतिष्ठित करता है। उन्हें अवतारी ईश्वर के रूप में नहीं मानता है। ईश्वर एक है। वह जन्म-मृत्यु तथा अवतार के बन्धन से परे है। वह कभी अवतार नहीं लेता है। ईश्वर और भगवान में मौलिक अन्तर है- भगवान शब्द पदवी व सम्मान है। मनुष्य गुण, कर्म, स्वभाव, आचरण से भगवान बन सकता है, मगर ईश्वर नहीं हो सकता है। ईश्वर चित्र-विचित्र जड़ चेतन सृष्टि को बनाता-चलाता, समस्त जीवों का पालन करता, संहार की शक्ति रखता और जीवों के कर्मानुसार फल देने की सामर्थ्य रखता है। ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, अजन्मा, नित्य आदि गुणों से युक्त है। वह सृष्टि का आदि और अन्त है। परमात्मा कभी मनुष्य देह धारण नहीं करता और उसे देह धारण करने की आवश्यकता भी नहीं है। ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान व वैराग्य इन छः को भग कहा गया है-जिनके पास ये छः बातें हैं उन्हें भगवान कहा गया है।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम और योगीराज भगवान श्रीकृष्ण दोनों महापुरुषों के पास ये छः बातें थीं इसलिए उन्हें भगवान पदवी से सम्मानित एवं प्रतिष्ठित किया गया। आम प्रचलन में सदैव इन दोनों देवात्माओं को भगवान संबोधन किया जाता है। कहीं इन दोनों महापुरुषों को परमात्मा ईश्वर, प्रभु आदि शब्दों में संबोधन नहीं मिलता है। ये दोनों असाधारण देवपुरुष हमारे सामने आदर्श रूप में रोल मॉडल हैं। इनके जीवन गुण-कर्म स्वभाव आचरण योगदान आदि से प्रेरणा, शिक्षा व सन्देश मिलता है मनुष्य चाहे तो वह भी गुण कर्म स्वभाव, आचरण तप त्याग सेवा आदि से भगवान बन सकता है। यही तो महापुरुषों के जन्मदिन, जयन्तियां व पर्व मनाने की सार्थकता, उपयोगिता व व्यावहारिकता है। इनका चित्र-चरित्र तथा स्मरण भूले-भटके मानव को दिशा व रोशनी देते हैं।

श्रीकृष्ण का प्रामाणिक व वास्तविक जीवन चरित्र हमें महाभारत और गीता में मिलता है। जहाँ उनके विश्ववन्द्य, सर्वगुण सम्पन्न, राष्ट्रनायक, सर्वमान्य, सर्वपूज्य, योगी, उपदेष्टा, नीतिनिपुण सर्वहितकारी, कर्मयोगी, मार्गदर्शक, खण्ड-खण्ड भारत को अखण्ड देखने वाले स्वप्न द्रष्टा आदि के रूप में सामने आते हैं। महाभारत के भीष्म पर्व में द्रोणाचार्य का यह कथन सत्य है-

यतो धर्मस्ततः कृष्णः यतः कृष्णस्ततो जयः

जहाँ धर्म है, वहां श्रीकृष्ण हैं और जहां श्रीकृष्ण हैं वहां विजय होगी। महाभारत में श्री कृष्ण ने राष्ट्रनायक की भूमिका बड़ी कुशलता, कूटनीति, निपुणता और सक्रियता से निभाई है संसार उनके इस कर्मकौशल के आगे नतमस्तक है। उन्होंने जो कार्य किए उनमें अपनी पहिचान व छाप छोड़ी है। गायें चराई तो गोपाल, बाँसुरी बजाई तो मुरलीधर, अर्जुन का रथ हाँका तो सारथी, सेवा की तो सेवक, सुदामा-मित्रता आदि सभी कार्यों में इतिहास बनाया। जितने नाम लोक में श्रीकृष्ण को मिले, उतने अन्य किसी महापुरुष को नहीं मिले। सभी नामों को उन्होंने सार्थक किया। तप, त्याग, सेवा, सहयोग पूर्ण श्रीकृष्ण से सम्बन्धित ऐतिहासिक, प्रेरक शिक्षाप्रद प्रसंग इतने हैं कि अलग से पुस्तक बन जाय। सच्चे अर्थ में श्रीकृष्ण को देखना, समझना, पढ़ना व सीखना है तो महाभारत में श्रीकृष्ण की भूमिका कर्मकुशलता एवं कूटनीतिज्ञ स्वरूप को समझना होगा तभी भीष्मपितामह को कहना पड़ा था- **कृष्णं वन्दे जगत गुरुम्।**

श्रीकृष्ण सही अर्थ में संसार के मार्गदर्शक, शुभ चिन्तक और मानव मात्र के हितैषी हैं। महाभारत में श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व एवं कृतित्व सम्बन्धी जीवन को संभालने, सुधारने व ऊंचा उठाने वाले उज्ज्वल उदाहरण भरे पड़े हैं। हम स्वाध्याय से दूर हो रहे हैं। हमने अपने महापुरुषों के सत्य इतिहास को पढ़ना - सुनना छोड़ दिया है। उसी का परिणाम है जो जन्माष्टमी- कृष्ण लीलाओं, रास लीलाओं, सीरियलों, पिक्चरों, नाटकों, चैनलों, लोक कथाओं, साहित्य आदि में जो श्रीकृष्ण का चरित्र पढ़ाया-सुनाया दिखाया बताया व बोला जा रहा है- उसी को सत्य वचन महाराज,

बाबा वाक्यं प्रमाणम् कह कर, हाथ जोड़ सिर नीचा कर बिना सोचे, समझे, विचारे स्वीकार कर रहे हैं। इस कारण भी ढोंग, पाखण्ड तथा अन्धविश्वास बढ़ रहा है।

गीता जैसा अमूल्य ग्रन्थ महाभारत का ही अंग है। विश्व के आध्यात्म क्षेत्र में गीता के माध्यम से भारत की एक विशेष पहिचान बनी है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण योगेश्वर के रूप में गीताज्ञान का अमर सन्देश देते दिखाई दे रहे हैं। उन्होंने गीता में निष्काम कर्म करते हुए जीवन-लक्ष्य-मोक्ष तक पहुँचने का जीवन सन्देश दिया है। गीता में श्रीकृष्ण का उच्च व दिव्य योगीराज का स्वरूप प्रकट हुआ है। गीता के माध्यम से श्रीकृष्ण का आध्यात्म व योगी रूप सामने आता है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे हिमालय के उच्च शिखर पर खड़ा कोई योगी-आत्मा- परमात्मा जीवन-मृत्यु, कर्म-अकर्म आदि का चिन्तन व सन्देश दे रहा हो। संसार गीता के श्रीकृष्ण को भूल रहा है, पुराणों के श्रीकृष्ण को मान व पकड़ रहा है। अर्जुन के माध्यम से वर्तमान-जीवन-जगत को स्वस्थ, सुखी एवं शान्त जीवन का व्यावहारिक समाधान और उपदेश दिया है। गीता का अमर सन्देश है ड्यूटी में ब्यूटी लाओ। यही योगः कर्मसु कौशलम् है। जो कार्य करो तन्मयता, कुशलता व पूर्णता से करो।

सुविज्ञ पाठक सोच, समझ और विचार पूर्वक निर्णय कर सकते हैं कि महाभारत और गीता के भगवान श्रीकृष्ण योगेश्वर हैं और कहाँ पुराणों, भागवद्, लोक कथाओं, रासलीला, जन्माष्टमी, सीरियलों आदि के श्रीकृष्ण भोगेश्वर के रूप में वर्णित हैं जमीन और आसमान का अन्तर है। दुनिया श्री कृष्ण को क्या से क्या बना रही है?

महाभारत में राधा का कहीं नाम नहीं आता है। मगर आज राधा के नाम के बिना श्रीकृष्ण की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। राधा के प्रेम की कल्पित कुत्सित, विकृत और कपोल कल्पित निराधार कल्पनाओं तथा बातों ने भगवान श्री कृष्ण के उच्च आदर्श चरित्र को तो हाँनि पहुंचाई ही है, साथ ही वर्तमान एवं आने वाली पीढ़ी को भी अनैतिकता एवं स्वच्छन्दता का पाठ पढ़ाया जा रहा है। यह अत्यन्त निन्दनीय एवं चिन्तनीय है। राधा का आश्रय लेकर रासलीलाओं, जन्माष्टमी, चैनलों पिक्चरों आदि के माध्यम से भोग, विलास पूर्ण विकृत श्रृंगारिक, अमर्यादित व वासनात्मक मानसिकता को प्रचारित व प्रसारित किया जा रहा है। यह देश, धर्म, सभ्यता, संस्कृति एवं भगवान श्रीकृष्ण के चरित्र और भारत पर कलंक है। साथ ही युवा पीढ़ी को पथ भ्रष्ट होने के रास्ते दिखाये जा रहे हैं। भगवान श्रीकृष्ण सच्चे अर्थ में पत्नीव्रत थे। उनकी पत्नी रुक्मिणी और पुत्र प्रद्युम्न थे। रुक्मिणि का नाम श्रीकृष्ण के इतिहास व जीवनवृत्त में तो दिया जाता है, मगर व्यावहारिक रूप व मन्दिरों, झांकियों, लीलाओं आदि में श्रीकृष्ण के साथ नहीं दिखाया जाता है। यह रुक्मणि के साथ अन्याय है। राधा को लेकर आधुनिक शिक्षा-दीक्षा से पठित युवापीढ़ी न जाने क्या-क्या उल्टा-सीधा बोलती है? यहां लिखना उचित नहीं है, इस पर धर्माधिकारियों को गम्भीरता व चिन्ता से सोचना-समझना और कुछ करना चाहिए। लीला के नाम पर भगवान श्रीकृष्ण को बदनाम, कलंकित पतित मत करो। सच्चा इतिहास हमें कभी माफ नहीं करेगा। भगवान श्रीकृष्ण जैसे तपस्वी, त्यागी, पत्नीव्रत महापुरुष व्यभिचारी व परस्त्री गामी कैसे हो सकते हैं? उनके नाम के साथ सोलह हजार रानियों की विकृत मनगढ़न्त कहानी और दूषित मानसिकता है। सच्चा इतिहास कुछ और है। सोचो, समझो और विकृत व गलत धारणाओं को बदलो। श्रीकृष्ण अद्वितीय महापुरुष थे।

ऋषि दयानन्द से बढ़कर प्रामाणिक पक्षपात रहित ऋषि और सत्य वक्ता हमारे लिए और कौन हो सकता है। उन्होंने योगीराज श्रीकृष्ण के उज्ज्वल चरित्र की प्रशंसा की है और कहा है- **देखो! श्रीकृष्ण का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण-कर्म-स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। श्रीकृष्ण जी ने जन्म से लेकर मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा कहीं भी नहीं लिखा है।"**

इसी प्रकार के विचार बंगाल के प्रसिद्ध **कृष्ण चरित लेखक बंकिम चन्द्र चटर्जी ने भी लिखे हैं-** "श्रीकृष्ण सर्वगुण सम्पन्न थे। वे सिंहासन पर होकर भी उदासीन थे। धनुर्धारी होकर भी वे धर्मवेत्ता थे। राजा होकर भी वे पण्डित थे। श्रीकृष्ण के चरित्र के समान गौरवपूर्ण एवं महिमापूर्ण चरित्र मानवसमाज में दूसरा नहीं होगा। श्रीकृष्ण का महाभारत के जीवन दर्शन से उनकी धार्मिकता, शील तथा चरित्र का पता चलता है। उनकी दिनचर्या वैदिक धर्मानुसार थी। वे महान आस्तिक व कर्मयोगी थे। प्रतिदिन सन्ध्या-वन्दन करते थे। जब दूत बनकर हस्तिनापुर जा रहे थे, महाभारत में आता है मार्ग में प्रातः सायंकाल को रथ रोक कर सन्ध्या करने का वर्णन है। गीता में उन्होंने ईश्वर के बारे में स्पष्ट घोषणा की है-

ईश्वरः सर्वभूतानां हृददेशेऽर्जुन निष्ठति-

हे! अर्जुन ईश्वर सभी के हृदयों में सदा विद्यमान रहता है। आगे कहा है-

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।

हे! अर्जुन सर्वत्र विद्यमान विराट् प्रभु की शरण में जाओ। वही तुम्हारा सच्चा माता-पिता है। महाभारत व गीता के उदाहरणों से स्वतः सिद्ध हो गया कि श्रीकृष्ण ईश्वर भक्त थे। वे स्वयं ईश्वर की सन्ध्या-वन्दन करते थे और गीता में अर्जुन को ईश्वर की सर्वव्यापकता और उसकी शरण जाने की सलाह देते हैं। अवतार से महापुरुषों का देवत्व तथा महापुरुषत्व का अवमूल्यन होता है। उनको महापुरुष मानने से ही उनका सम्मान गरिमा व देवत्व सुरक्षित रहेगा यदि हम महापुरुषों के चरित्र से सीखना एवं प्रेरणा लेना चाहें तो जीवन-जगत के लिए बहुत कुछ शिक्षा व आदर्श ले सकते हैं। जिधर से भी श्रीकृष्ण का जीवन चरित्र देखा जाय, उधर से हमें शिक्षा, प्रेरणा सन्देश और प्रेरक आदर्श मिलता है। उनके जीवन की कुछ प्रेरक बातें संक्षेप में इस प्रकार हैं- जो हमें सदा संभालती सुधारती तथा प्रेरित करती रहेंगी-

महाभारत का युद्ध न हो, उसे रोकने के लिए कौरवों को समझाने के लिए दूत बन श्रीकृष्ण हस्तिनापुर जाते हैं। विदुर जी को पता चलता है श्रीकृष्ण को कहते हैं आप यहाँ क्यों आए? क्या तुम नहीं समझते कि मैंने युद्ध रोकने के लिये कौरवों को नहीं समझाया? ये वे नहीं मानेंगे। श्रीकृष्ण ने कहा- मैं जानता हूँ युद्ध जरूर होगा, जब बुद्धि विपरीत होती, तब विनाश की ओर जाने लगती है। मैं हस्तिनापुर इसलिए आया हूँ जिससे लोक आने वाला इतिहास, संसार तथा जनता यह न कह सके कि श्रीकृष्ण ने युद्ध को रोकने के लिए प्रयास नहीं किया। उस देवात्मा का यही देवत्व था जिसे संसार ने भुला दिया। श्रीकृष्ण ने मजबूरी में कोई रास्ता न निकल पाने पर युद्ध का समर्थन किया था। दूतकाल में दुर्योधन ने श्री कृष्ण को आतिथ्य का निमन्त्रण दिया। उन्होंने यह कहकर ठुकरा दिया व्यक्ति दो अवस्था में भोजन करता है- पहला आत्मीय सम्बन्धों व मित्रता में दूसरा विपत्ति में, यहाँ दोनों की स्थिति विपरीत हैं। उन्होंने विदुर जी का सीधा सरल सात्विक आतिथ्य स्वीकार किया। सेवा की बात आई तो युधिष्टिर के राजसूय यज्ञ में, विद्वानों, गुरुजनों और महापुरुषों के चरण धोने का तथा जूठी पत्तलें उठाने की जिम्मेदारी ली। ऐसी विनम्रता शालीनता, निरभिमानता, सेवा त्याग

- शेष पृष्ठ 4 पर

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 22 अगस्त से रविवार 28 अगस्त, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 25 अगस्त/ 26 अगस्त, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 24 अगस्त, 2016

पृष्ठ 3 का शेष

प्रेरक जीवन के धनी-योगीराज ....

आदि के कारण राजसूय यज्ञ में वे प्रथम पूजा के अधिकारी बने। उनकी अग्रपूजा का प्रस्ताव करते हुए भीष्म पितामह ने उन्हें अपने युग का वेद-वेदांगों का उत्कृष्ट ज्ञाता, अतीव बलशाली और मनुष्यलोक में अति विशिष्ट महापुरुष बताया था।

महाभारत में श्रीकृष्ण के एक हाथ में पाञ्चजन्य शंख और दूसरे हाथ में सुदर्शन चक्र उठाये योगेश्वर और पाण्डव साम्राज्य के निर्माता के रूप में उन्हें दिखाया गया है। महाभारत की विजय के बाद श्रीकृष्ण स्वयं राजा बन सकते थे। मगर उन्होंने युधिष्ठिर को राजा बनाया। यह त्याग उन्हें सर्व पूज्य पद पर प्रतिष्ठित करता है। मित्र सुदामा की आर्थिक स्थिति को देखकर, उन्हें बिना बताए, बिना सूचित किए, अपने पास रखकर, उनके लिए सुन्दर भवन बनवा देना। बाल्यकाल की मैत्री को पुन: जीवित कर देना, ऐसी श्रीकृष्ण के चरित्र की ही विशेषता यह उनका दैवीय गुण था। गरीब ब्राह्मण और सम्पन्न राजा की मैत्री का उदाहरण इतिहास में मित्रता की मिसाल बन गया। शिशुपाल की सौ गालियों को माफ कर देना। सामान्य बात नहीं है। साधारण व्यक्ति एक गाली भी वर्दाश्त नहीं कर पाता है, तुरन्त आग बबूला होकर मरने-मारने के लिए तैयार हो जाता है। यह भगवान श्री कृष्ण के चरित्र की असाधारण विशेषता थी। धैर्य क्षमा रखते हुए, निरन्तर अपमानित होकर भी सौ गालियों को सहन कर लेना। संसार के इतिहास में श्रीकृष्ण ही हो सकते हैं। दूसरा और कोई नहीं। शिशुपाल अभद्र गाली देकर श्रीकृष्ण को उत्तेजित व क्रोधित करना चाहता था मगर वे अपनी प्रतिज्ञा एवं वचन बद्धता से विचलित नहीं हुए। यह उनका दैवीय गुणथा। वर्तमान समय में क्रोध व हिंसा तेजी से बढ़ रही है। यदि क्षमा, धैर्य, शान्ति, सेवा, त्याग आदि की प्रेरणा व सन्देश लेना हो तो श्रीकृष्ण जैसा महामानव इतिहास में न मिलेगा। श्रीकृष्ण इहलोक और परलोक दोनों के ज्ञाता व मर्मज्ञ थे। उनके जीवन में यथार्थ व आदर्श दोनों का समन्वय था। वे हर स्थिति में सन्तुलन रखना व बनाना जानते थे। यदि कोई जीने की कला सीखना चाहे तो ये श्री कृष्ण से सीखें। कितनी मुसीबतें, उलझनें, चिन्ताएँ, संकट, संघर्ष विवाद आदि जीवन में आए मगर वह मुस्कुराते हुए सब झेलते रहे। कभी चेहरे पर चिन्ता, तनाव बेचैनी व शिकन नहीं आने दी। आज भी जो उनके चित्र मिलते हैं। उनमें हँसते-मुस्कराते हुए दिखाई देते हैं। हम थोड़े से दु:ख, अभाव, पीड़ा में घबरा जाते हैं। श्री कृष्ण का जीवन दर्शन निराश, हताश, उदास, दु:खी परेशान व्यक्ति को सदा आगे बढ़ने की प्रेरणा, शक्ति देता हुआ मार्ग दर्शन करता रहेगा।

प्रतिवर्ष श्री कृष्ण के जन्म को जन्माष्टमी के रूप में बड़ी धूम-धाम, रासलीला, कृष्ण लीला, झांकियों और तरह-तरह के कार्यक्रमों से मनाया जाता है। ग्लैमरस, रास-रंग, शृंगारपूर्ण आयोजनों में करोड़ों रुपयों का बजट बनता है। विद्युत् की चकाचौध, शोर-शराबे के बीच और आकर्षक मोहक झांकियों में भगवान श्री कृष्ण के व्यक्तित्व, कृतित्व योगदान, महत्व विशेषताओं आदि का वास्तविक सत्य स्वरूप गौण और ओझल हो जाता है। खाना-पीना, गाना, बजाना, सैर-सपाटे आदि में ही प्रेरक जन्माष्टमी की रस्म अदायगी हो जाती है। आर्य समाज के अतिरिक्त कहीं भी गम्भीर विचार, प्रामाणिक चिन्तन-मनन तथा सन्देश नहीं मिलता है। जिस रंग-रूप में दुनियाँ श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव मनाती व सजाती है उस तरह के प्रदर्शन, आडम्बर, शोर-शराबे आदि से आर्य समाज नहीं मनाता है। यज्ञ भजन, प्रवचन के द्वारा और तर्क-प्रमाण युक्त विद्वत्तापूर्ण चिन्तन-मनन के साथ भगवान श्रीकृष्ण के गरिमापूर्ण चारित्रिक विशेषताओं को रेखांकित कर सन्देश देता है। ऐसा अन्यत्र न मिलेगा। यह दु:खान्त पीड़ा है कि महापुरुषों के जन्मदिन, जयन्तियाँ पर्व उत्सव आदि धार्मिक मनोरंजन बनते जा रहे हैं। हमारे महापुरुषों का असली ऐतिहासिक, प्रेरक, उज्ज्वल पक्ष ढोंग पाखण्ड अन्धाश्रद्धा, आडम्बर, अन्धविश्वास, दिखावा प्रदर्शन आदि की बातों से तेजी से जुड़ता जा रहा है। इन बातों से हमारी विश्व पटल पर साख, सम्मान व पहिचान कलंकित हो रही है। एक विदेशी विचारक ने हमारे महापुरुषों पर टिप्पणी की थी कि "भारत के लोग कैसे विचित्र, अन्धविश्वासी व अज्ञानता में हैं जिन महापुरुषों को ये लोग भगवान मानते, पूजते, प्रार्थना भक्ति आदि करते हैं उन्हीं की मूर्तियों को आगे रखकर उनके नाम पर भीख और पैसा मांगते हैं, उन्हें नचाते, गवाते और तरह-तरह के उनसे नाटक करवाते हैं। श्रीकृष्ण को मटकी तोड़ते, रासलीला करते देख तालियाँ बजा-बजाकर प्रसन्न होते हैं। दुर्भाग्य है कि हमने पुराणों, भागवत लोककथाओं, मनगढ़ंत किस्से कहानियों के मुरलीधर श्रीकृष्ण को सब कुछ समझकर अपना लिया और प्रचलित स्वरूप को स्वीकार कर लिया है मगर महाभारत व गीता के उज्ज्वल प्रेरक युगपुरुष भगवान सुदर्शन चक्रधारी योगीराज श्रीकृष्ण को भुला रहे हैं। आज जिस दौर से देश, धर्म जाति, संस्कृति, इतिहास और मानवता गुजर रही है उसमें मुरली वाले श्रीकृष्ण की उपयोगिता नहीं है इस समय संसार में सुरदर्शन चक्रधारी राष्ट्र निर्माता, विधाता योगीराज श्रीकृष्ण की जरूरत है।

संक्षिप्त चर्चा में भगवान श्रीकृष्ण का स्वरूप ऐसा नहीं है जैसा ऊपरी तौर पर आज सर्वत्र दिखाया, पढ़ाया, सुनाया जाता है तथा चर्चा में है, और जैसे श्रीकृष्ण वर्तमान में झांकियों, रासलीलाओं में दिखाये जाते हैं। प्रेरक जन्माष्टमी पर्व हमें भगवान श्रीकृष्ण के वास्तविक जीवन चरित्र को पढ़ने, जानने, समझने और उनके जीवन से शिक्षा, उपदेश, सन्देश आदि लेने की प्रेरणा देती है। यदि हम जन्माष्टमी पर्व से अपने जीवन जगत के लिए कुछ उपयोगी, महत्त्वपूर्ण सार्थक दृष्टि और बातें ले सकें तभी इन पर्वों के मनाने की सार्थकता, उपयोगिता और व्यावहारिकता है।

-बी.जे.29, शालीमार बाग, दिल्ली-110088

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह